



नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 179
दि. 03.04.2026,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

विदेशी धरती पर दम तोड़ते सपने: खाड़ी देशों में भारतीय श्रमिकों की मौतों ने बढ़ाई चिंता

विदेशों में बेहतर भविष्य और आर्थिक स्थिरता की उम्मीद लेकर जाने वाले भारतीय श्रमिकों के लिए हालात लगातार चिंताजनक होते जा रहे हैं। हाल ही में संसद में पेश किए गए आंकड़ों ने इस कड़वी सच्चाई को उजागर किया है कि विदेशी धरती पर हर दिन औसतन 20 से अधिक भारतीय श्रमिक अपनी जान गंवा रहे हैं। यह आंकड़ा न केवल चौंकाने वाला है, बल्कि उन लाखों परिवारों की पीड़ा को भी दर्शाता है, जिनकी आजीविका इन प्रवासी कामगारों पर निर्भर करती है। सरकार की ओर से दिए गए लिखित जवाब में Kirti Vardhan Singh ने बताया कि वर्ष 2021 से 2025 के बीच कुल 37,740 भारतीयों की विदेशों में

मृत्यु हुई है। यह संख्या अपने आप में एक गंभीर संकेत है कि विदेशों में काम करने वाले भारतीय श्रमिकों की सुरक्षा और जीवन परिस्थितियों को लेकर अब भी कई सवाल अनुत्तरित हैं। चिंताजनक बात यह है कि इन मौतों के कारणों का विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं कराया गया, जिससे समस्या की वास्तविक जड़ तक पहुंचना और भी कठिन हो जाता है। इन आंकड़ों का गहराई से विश्लेषण करें तो एक अस्थिर और बढ़ती हुई प्रवृत्ति सामने आती है। वर्ष 2021 में 8,234 मौतें दर्ज की गईं, जो इस राज्यसभा में सरकार की ओर से दिए गए लिखित जवाब में Kirti Vardhan Singh ने बताया कि वर्ष 2021 से 2025 के बीच कुल 37,740 भारतीयों की विदेशों में



संख्या फिर बढ़कर 7,291 हो गई, 2024 में यह 7,747 और 2025 में 7,854 तक पहुंच गई। यह लगातार बढ़ती प्रवृत्ति इस बात का संकेत है कि समस्या अभी भी नियंत्रण से बाहर है और इसके समाधान के लिए ठोस और प्रभावी कदम उठाने की जरूरत है।

12,380 और Saudi Arabia में 11,757 मौतें दर्ज की गईं, जो सबसे अधिक हैं। इसके अलावा Kuwait (3,890), Oman (2,821) और Qatar (1,760) में भी बड़ी संख्या में भारतीय श्रमिकों की मौत हुई है। दक्षिण-पूर्व एशिया में Malaysia में 1,915 मौतें दर्ज की गईं, जबकि अन्य देशों जैसे अमेरिका, सिंगापुर, नाइजीरिया और ब्रिटेन में अपेक्षाकृत कम मामले सामने आए हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि खाड़ी देशों में अत्यधिक गर्मी, कठिन कार्य परिस्थितियों, लंबे कार्य घंटे, अपर्याप्त सुरक्षा उपाय और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी इन मौतों के पीछे प्रमुख कारण हो सकते हैं। हालांकि, आधिकारिक तौर पर इन कारणों की पुष्टि न होना स्थिति को और अधिक

गंभीर बना देता है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि कई मामलों में श्रमिकों को समय पर चिकित्सा सहायता नहीं मिल पाती, जिससे छोटी समस्याएं भी जानलेवा साबित हो जाती हैं। दुर्घटनाओं की बढ़ती शिकायतों भी एक बड़ा मुद्दा बनकर उभरी हैं। सरकार के अनुसार, 2021 से 2025 के बीच भारतीय श्रमिकों को कुल 80,985 शिकायतें प्राप्त हुईं, जो कार्यस्थल की खराब स्थितियों, वेतन न मिलने, पासपोर्ट जब्त किए जाने और मानसिक व शारीरिक उत्पीड़न से संबंधित थीं। इन शिकायतों में United Arab Emirates सबसे आगे रहा, जहां से 16,965 शिकायतें दर्ज की गईं। इसके बाद कुवैत, ओमान और सऊदी अरब का स्थान आता है। मलेशिया

और मालदीव जैसे देशों से भी बड़ी संख्या में शिकायतें सामने आई हैं, जो इस समस्या के व्यापक स्वरूप को दर्शाती हैं। सरकार का कहना है कि वह विदेशों में रह रहे भारतीयों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। भारतीय दूतावास और मिशन संकट की स्थिति में तत्काल हस्तक्षेप करते हैं और स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर समस्याओं का समाधान निकालने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा, भारत ने कई देशों के साथ श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए द्विपक्षीय समझौते (MoUs) भी किए हैं। जरूरत पड़ने पर श्रमिकों को कानूनी सहायता भी उपलब्ध कराई जाती है। फिर भी, जमीनी हकीकत यह है कि बढ़ती मौतों और शिकायतों इस ओर

इशारा करती हैं कि इन प्रयासों के बावजूद कई गंभीर चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं। बेहतर निगरानी तंत्र, पारदर्शिता, श्रमिकों के लिए मजबूत सुरक्षा कानून और प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता अब पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है। यह आंकड़े केवल संख्या नहीं हैं, बल्कि उन हजारों परिवारों की कहानियां हैं, जो अपने प्रियजनों को बेहतर भविष्य के सपनों के साथ विदेश भेजते हैं, लेकिन कई बार उन्हें केवल दुखद समाचार ही वापस मिलता है। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि इस मुद्दे को केवल आंकड़ों तक सीमित न रखकर, इसे मानवीय दृष्टिकोण से देखा जाए और ठोस समाधान की दिशा में गंभीर प्रयास किए जाएं।

ईरान को बड़ा झटका: स्पेशल यूनिट कमांडर की मौत, बढ़ते संघर्ष में सैन्य ढांचे पर असर

तेहरान। पश्चिम एशिया में तेजी से बदलते हालात के बीच ईरान को एक और बड़ा सैन्य झटका लगा है। Islamic Revolutionary Guard Corps (IRGC) की फतेहिन स्पेशल यूनिट के कमांडर Mohammad Ali Fathalizadeh की मौत की पुष्टि ईरानी सरकारी मीडिया ने की है। बताया जा रहा है कि 1 अप्रैल को हुए हमलों के दौरान वह मारे गए। ईरान ने इस पूरे संघर्ष को "रमजान का युद्ध" बताते हुए उन्हें "शहीद" घोषित किया है, जो यह दर्शाता है कि यह टकराव अब केवल सैन्य नहीं बल्कि वैचारिक और भावनात्मक स्तर पर भी गहराता जा रहा है। फतेहिन यूनिट, IRGC की उन विशेष इकाइयों में शामिल मानी जाती है, जिन्हें सबसे उन्नत और कठिन सैन्य प्रशिक्षण दिया जाता है। इस यूनिट के जवानों को अक्सर ऐसे मिशनों के लिए तैयार किया जाता है, जहां उच्च जोखिम, गुप्त ऑपरेशन और रणनीतिक हस्तक्षेप की जरूरत होती है। यह यूनिट पहले भी सीरिया जैसे संघर्षरत क्षेत्रों में सक्रिय

रह चुकी है, जहां ईरान ने अपने प्रभाव को बनाए रखने और सहयोगी सरकारों को समर्थन देने के लिए सैन्य उपस्थिति दर्ज कराई थी। ऐसे में इसके कमांडर की मौत केवल एक व्यक्ति की क्षति नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण सैन्य क्षमता के कमजोर होने का संकेत भी है। यह घटना ऐसे समय पर हुई है जब ईरान, United States और Israel के बीच तनाव अपने चरम पर पहुंचता दिखाई दे रहा है। पिछले कुछ महीनों में लगातार हमलों, जवाबी कार्रवाइयों और गुप्त ऑपरेशनों की खबरें सामने आती रही हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह के लक्षित हमले ईरान की सैन्य नेतृत्व क्षमता को कमजोर करने की एक रणनीति का हिस्सा हो सकते हैं, जिससे उसकी ऑपरेशनल ताकत और निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित हो। दरअसल, यह पहला बार नहीं है जब ईरान के किसी वरिष्ठ सैन्य अधिकारी को इस संघर्ष में निशाना बनाया गया हो। इससे पहले मार्च के अंतिम सप्ताह में IRGC नौसेना प्रमुख Alireza Tangsiri के मारे जाने की खबर ने

भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हलचल मचा दी थी। इसके अलावा बर्सीज फोर्स के प्रमुख Gholamreza Soleimani भी हमलों में अपनी जान गंवा चुके हैं। लगातार हो रहे इन हमलों से यह साफ संकेत मिलता है कि ईरान के सैन्य ढांचे के शीर्ष स्तर को व्यवस्थित तरीके से निशाना बनाया जा रहा है। इन घटनाओं का असर केवल सैन्य स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका व्यापक भू-राजनीतिक प्रभाव भी पड़ रहा है। ईरान के भीतर जहां इन कमांडरों को "शहीद" के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, वहीं इससे जनता के बीच भावनात्मक उबाल भी देखने को मिल रहा है। दूसरी ओर, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह घटनाक्रम पश्चिम एशिया में अस्थिरता और बढ़े संघर्ष की आशंका को और बढ़ा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार, इस तरह के लगातार नुकसान से ईरान को अपनी सैन्य रणनीति और सुरक्षा ढांचे में बड़े बदलाव करने पड़ सकते हैं। वरिष्ठ अधिकारियों की मौत से न केवल नेतृत्व में कमी आती है, बल्कि रणनीतिक निरंतरता भी प्रभावित होती है। हालांकि,

IRGC जैसी संगठित और वैचारिक रूप से मजबूत संस्था के लिए यह भी संभव है कि वह इन नुकसानों को "प्रेरण" के रूप में इस्तेमाल कर अपने नेटवर्क को और सक्रिय करे। इस पूरे घटनाक्रम के बीच सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या यह संघर्ष अब और व्यापक रूप लेगा। जिस तरह से लगातार उच्च पदस्थ अधिकारियों को निशाना बनाया जा रहा है, उससे यह संकेत मिल रहा है कि आने वाले समय में टकराव और तीव्र हो सकता है। यदि कूटनीतिक स्तर पर कोई ठोस पहल नहीं हुई, तो यह क्षेत्र एक बड़े युद्ध की ओर भी बढ़ सकता है, जिसका असर वैश्विक राजनीति, ऊर्जा आपूर्ति और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा पर पड़ेगा। फिलहाल, Tehran में शोक और तनाव का माहौल है, जबकि पूरी दुनिया की नजरें इस बात पर टिकी हैं कि आगे ईरान इस घटना का जवाब किस तरह देता है। यह स्पष्ट है कि यह केवल एक घटना नहीं, बल्कि एक बड़े और जटिल संघर्ष की कड़ी है, जिसके दूरगामी परिणाम हो सकते हैं।

चुनावी सरगर्मी के बीच ईडी की बड़ी कार्रवाई, I-PAC पर देशभर में छापे से सियासत गरमाई

नई दिल्ली। देश की सियासत एक बार फिर उस मोड़ पर आ खड़ी हुई है, जहां जांच एजेंसियों की कार्रवाई और राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप आमने-सामने दिखाई दे रहे हैं। Enforcement Directorate यानी ईडी ने एक साथ कई बड़े शहरों में छापेमारी करते हुए राजनीतिक परामर्श फर्म Indian Political Action Committee से जुड़े ठिकानों पर तलाशी अभियान चलाया है। यह कार्रवाई दिल्ली, बंगलुरु और हैदराबाद में एक साथ की गई, जिससे राजनीतिक हलकों में हलचल तेज हो गई है। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव की बढ़ती गतिविधियों के बीच इस कार्रवाई को बेहद अहम माना जा रहा है और इसके दूरगामी राजनीतिक प्रभाव भी देखने को मिल सकते हैं। ईडी के अधिकारियों के अनुसार यह तलाशी अभियान कुछ अधिकारियों और उनसे जुड़े परिसरों को लेकर किया गया है, जिन पर वित्तीय अनियमितताओं और अन्य संदिग्ध लेनदेन से जुड़े मामलों की जांच चल रही है। हालांकि एजेंसी की ओर से अभी तक विस्तृत जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है, लेकिन सूत्रों का कहना है



कि यह कार्रवाई पहले से चल रही जांच का ही विस्तार है। इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या जांच एजेंसियों की सक्रियता केवल कानूनी प्रक्रिया का हिस्सा है या इसके पीछे राजनीतिक समय और रणनीति भी भूमिका निभा रही है। गौरतलब है कि इससे पहले भी ईडी ने आठ जनवरी को कोलकाता में I-PAC के दफ्तर और फर्म के प्रमुख Prateek Jain के आवास पर छापेमारी की थी। सुबह करीब 6 बजे शुरू हुई यह कार्रवाई जांच चल रही है। जांच के बाद राज्य की राजनीति में जबरदस्त हलचल देखने को मिली थी। उस समय हालात

इतने संवेदनशील हो गए थे कि Mamata Banerjee खुद मौके पर पहुंच गई थीं और उन्होंने इस कार्रवाई को लेकर कड़ा विरोध जताया था। उनका यह कदम स्पष्ट संकेत था कि इस पूरे मामले को केवल जांच तक सीमित नहीं देखा जा रहा, बल्कि यह राजनीतिक टकराव का भी रूप ले चुका है। उस छापेमारी के बाद एक और विवाद सामने आया था, जब प्रतीक जैन के परिवार ने ईडी पर घर से जरूरी दस्तावेज चोरी करने का आरोप लगाया। उनकी पत्नी ने Shakespeare Sarani Police Station में शिकायत दर्ज कराई है, जिसमें कहा गया था कि तलाशी के दौरान कुछ महत्वपूर्ण कागजात गायब हो गए। इस आरोप ने पूरे मामले को और अधिक जटिल बना दिया, क्योंकि इससे जांच एजेंसी की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठने लगे। इसके बाद यह विवाद केवल राज्य स्तर तक सीमित नहीं रहा, बल्कि मामला Supreme Court of India तक पहुंच गया। आरोप लगाए गए कि पश्चिम बंगाल

सरकार के कुछ अधिकारियों ने ईडी की कार्रवाई में बाधा डालने की कोशिश की। इस घटनाक्रम ने केंद्र और राज्य के बीच टकराव की स्थिति को और अधिक स्पष्ट कर दिया, जिससे यह मामला कानूनी और राजनीतिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण बन गया। अब एक बार फिर दिल्ली, बंगलुरु और हैदराबाद में एक साथ हुए छापेमारी ने इस पूरे मुद्दे को राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का केंद्र बना दिया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पश्चिम बंगाल में चुनावी माहौल के बीच इस तरह की कार्रवाई का सीधा असर राजनीतिक समीकरणों पर पड़ सकता है। एक तरफ जहां सत्तारूढ़ दल इसे केंद्र सरकार द्वारा दबाव बनाने की कोशिश बता सकता है, वहीं दूसरी ओर विपक्ष इसे कानून के तहत की जा रही आवश्यक कार्रवाई के रूप में पेश करेगा। इस पूरे घटनाक्रम ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आने वाले दिनों में यह मुद्दा और अधिक गरमाने वाला है। जांच एजेंसी अपनी कार्रवाई को कानूनी प्रक्रिया का हिस्सा बता रही है, जबकि राजनीतिक दल इसे अपने-अपने नजरिए से देख रहे हैं।

बंगाल में डेरा डालेंगे अमित शाह, 'एक सीट से बदलाव' का फॉर्मूला देकर साधा चुनावी निशाना

पश्चिम बंगाल की राजनीति में चुनावी सरगर्मी अपने चरम पर पहुंच चुकी है और इसी बीच केंद्रीय गृह मंत्री Amit Shah ने राज्य में 15 दिनों तक लगातार प्रवास करने का ऐलान कर सियासी समीकरणों को नया मोड़ दे दिया है। गुरुवार को आयोजित एक विशाल चुनावी रैली में उन्होंने न केवल पार्टी उम्मीदवार Suwendu Adhikari के समर्थन में माहौल बनाया, बल्कि भाजपा की जीत का एक ऐसा 'आसान तरीका' भी पेश किया, जिसने राजनीतिक बहस को और तेज कर दिया है। उनका यह बयान साफ संकेत देता है कि भाजपा इस बार बंगाल में सत्ता परिवर्तन को लेकर पूरी तरह आक्रामक रणनीति पर काम कर रही है।



अमित शाह ने अपने संबोधन की शुरुआत में ही यह स्पष्ट कर दिया कि वह लंबे भाषण देने के बजाय सीधे जनता से संवाद पर भरोसा रखते हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले 15 दिनों में वह बंगाल के अलग-अलग हिस्सों में जाकर लोगों से मुलाकात करेंगे, उनकी समस्याएं सुनेंगे और भाजपा के पक्ष में माहौल तैयार करेंगे। उन्होंने दावा किया कि वह पहले ही राज्य के लगभग हर हिस्से का दौरा कर चुके हैं और हर जगह एक ही भावना देखने को मिल रही है—मौजूदा सरकार के प्रति नाराजगी और बदलाव की तीव्र इच्छा। रैली के दौरान शाह ने राज्य की कानून-व्यवस्था, कथित भ्रष्टाचार, महिलाओं की सुरक्षा और घुसपैठ जैसे मुद्दों को जोरदार तरीके से उठाया। उन्होंने आरोप लगाया कि आम नागरिक रंगदारी और राजनीतिक हिंसा से परेशान हैं तथा उन्हें सुरक्षित

काफी अहम माना जा रहा है, क्योंकि भवानीपुर सीट को मुख्यमंत्री Mamata Banerjee का मजबूत गढ़ माना जाता है। अमित शाह ने अपने भाषण में ममता बनर्जी पर तीखे हमले भी किए। उन्होंने कहा कि पिछले चुनाव में भले ही तृणमूल कांग्रेस ने सत्ता हासिल की थी, लेकिन ममता बनर्जी स्वयं नंदीग्राम में सुवेंदु अधिकारी से हार गई थीं। उन्होंने दावा किया कि इस बार जनता पूरे राज्य में बदलाव के मूड में है और ममता बनर्जी को न केवल राज्य स्तर पर, बल्कि उनके अपने निर्वाचन क्षेत्र में भी हार का सामना करना पड़ सकता है। इस दौरान शाह ने मतदाताओं में व्याप्त भय की भावना को दूर करने की भी कोशिश की। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों को यह आशंका है कि वे मतदान के से स्वीकार करती हैं और अंततः चुनाव बार किसी को डरने की जरूरत नहीं है।

उन्होंने भरोसा दिलाया कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बाधित करने की किसी भी कोशिश को सख्ती से रोका जाएगा और हर मतदाता को अपने अधिकार का प्रयोग करने का पूरा अवसर मिलेगा। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, अमित शाह का यह 15 दिवसीय प्रवास केवल चुनाव प्रचार नहीं, बल्कि एक व्यापक रणनीतिक अभियान है। इसके जरिए भाजपा न केवल संगठन को मजबूत करने की कोशिश कर रही है, बल्कि जमीनी स्तर पर मतदाताओं के बीच अपनी पकड़ भी बढ़ाना चाहती है। खासतौर पर उन क्षेत्रों में, जहां पार्टी को अभी और मजबूती की जरूरत है, वहां इस तरह के दौरे निर्णायक साबित हो सकते हैं। दूसरी ओर, तृणमूल कांग्रेस भी पूरी ताकत के साथ मैदान में है और दोनों दलों के बीच सीधी टक्कर देखने को मिल रही है। ऐसे में अमित शाह का यह आक्रामक रुख और 'एक सीट से बदलाव' का फॉर्मूला चुनावी माहौल को और अधिक दिलचस्प बना रहा है। कुल मिलाकर, बंगाल का यह चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का संघर्ष नहीं, बल्कि विचारधाराओं और रणनीतियों की भी लड़ाई बन चुका है। अमित शाह का 15 दिन तक राज्य में रहना और लगातार रैलियां करना इस बात का संकेत है कि आने वाले दिनों में चुनावी मुकाबला और भी तेज होने वाला है। अब यह देखना बेहद दिलचस्प होगा कि जनता इस राजनीतिक रणनीति को किस तरह से स्वीकार करती है और अंततः चुनाव परिणाम किस दिशा में जाते हैं।



नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी



Jio Air Fiber



Jio Tv +



Jio Fiber



Daily Hunt



ebaba Tv



Dish Plus



DTH live OTT



Rock TV



Airtel



Amezone Fire



Roku Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए आज ही नवसर्जन संस्कृति हिंदी चैनल देखिये

संपादकीय धैर्य खोती पीढ़ी की घातक आक्रामकता

पिछले दिनों वाराणसी में मोबाइल चोरी के संदेह में एक किशोर की पीट-पीट कर हत्या करने की हृदयविदारक घटना सामने आई। घटना कानून व्यवस्था पर तो सवाल है ही, साथ ही भीड़ की बर्बरता की कहानी भी कहती है। क्या एक बच्चे की जिंदगी मोबाइल से सस्ती है? सवाल समाज की बढ़ती आक्रामकता पर भी है। एक ओर हम समाज में कानून का शासन चाहते हैं, वहीं दूसरी ओर कानून हाथ में लेकर किसी की भी जान लेने पर उतारू हो जाते हैं। निस्संदेह, यदि किसी व्यक्ति की अपराध में शामिल होने की आशंका भी है तो उसे पुलिस को सौंप जाना चाहिए। उसके खिलाफ कानूनी कवायम होनी चाहिए। अराजक तरीके से मार-पीटकर किसी की हत्या कर देने का अधिकार भीड़ को कैसे मिल सकता है? सवाल ऐसी घटनाओं पर शेष समाज की उदासीनता का भी है। जब उस किशोर को पीटा जा रहा था तो आसपास से गुजरने वाले लोग क्यों उसे बचाने नहीं आए? हाल के दिनों में महज शक के आधार पर लोगों को मौत के घाट उतारने व घायल करने की घटनाएं आम हो गई हैं। यह हमारे समाज के लिये भी चिंता का विषय है क्योंकि निहित स्वार्थी तत्व अक्सर निर्दोष लोगों को जाति व संप्रदाय के नाम पर अपने बहुलता वाले इलाके में शिकार बना लेते हैं। प्रश्न यह भी है कि इस तरह की बढ़ती घटनाओं के बीच सरकारों की तरफ से जमीनी स्तर पर कारगर कदम उठाने की पहल क्यों नहीं होती? जाहिर बात है कि व्यक्ति विशेष को शक के आधार पर निशाना बनाने वाले लोगों में कानून का डर न के बराबर ही होता है। साथ ही आसपास के लोगों का महज तमाशाबीन बना रहना भी भीड़ के अराजक व्यवहार को बढ़ावा देता है। वाराणसी की घटना में जिस तरह किशोर को घर से बुलाकर सड़क पर पीटा गया और लोग खामोश रहे, परेशान करने वाला घटनाक्रम ही है।

निश्चित रूप से भीड़ द्वारा संदेह के आधार पर किसी की हत्या करना, किसी भी सभ्य समाज के माथे पर कलंक जैसा है। ऐसे मामलों में पुलिस को भी अपना सूचना तंत्र मजबूत करने और संवेदनशील ढंग से कार्रवाई करने की जरूरत है। खासकर उस क्षेत्र के थाने की पुलिस व अधिकारियों की जवाबदेही तय करने की आवश्यकता है। हमारे समाज में संदेह के आधार पर किसी की जान लेने की प्रवृत्ति जिस तेजी से बढ़ रही है, वह हमारी गंभीर चिंता का विषय होना चाहिए। आये दिन हम सड़कों पर रोड रैज की घटनाएं सुनते और देखते हैं। सड़क में आगे निकलने की होड़ में गोली चलाने और हिंसक प्रतिक्रिया की घटनाएं अक्सर सामने आती हैं। पिछले दिनों देहरादून में आगे निकलने की होड़ में दो कारों में सवार लोगों की गोलीबारी में सड़क पर सैर कर रहे सेना के एक सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर की हत्या की घटना उभराखंड में व्यापक जनक्रोध का विषय बनी। ऐसी घटनाएं इस बात की ओर इशारा कर रही हैं कि नई पीढ़ी के लोग अपना धैर्य, विवेक तथा संवेदनशीलता खोते जा रहे हैं। ये हमारे मानवीय मूल्यों व संवेदना का भी क्षरण है। दरअसल, हमारे समाज में संयुक्त परिवारों का बिखराव होने से बच्चों की संवेदनशील ढंग से परवरिश का न हो पाना भी युवाओं में बढ़ती आक्रामकता की वजह बन रहा है। पहले स्कूलों में शिक्षकों का दबदबा होता था और छात्र जीवन में अनुशासन का पाठ सीखते थे। मां-बाप के लाडल-प्यार और बच्चों को स्वच्छंद व्यवहार की आजादी ने उन्हें उच्छ्वेखल बनाया है। एकल परिवारों में पलने वाले अकेले बच्चों में दूसरों को आसानी से सहन न करने की प्रवृत्ति भी तेजी से बढ़ी है। वहीं दूसरी ओर समाज में लगातार जटिल होता जीवन की उपरता को बढ़ावा दे रहा है। नशा भी नाश का कारक बन रहा है। सूचना माध्यमों में ब्याज दार दर्शाए जा रहे वित्तासिध्दा व भ्रष्टाचार के सपने देखकर जब नई पीढ़ी कठोर यात्रा से जुड़ती है तो हताशा के चलते उसमें अक्रोध के स्वर मुखर होते हैं। सिमटते रोजगार व मनमायिक अवसर न मिलने की कुंठा भी उन्हें आक्रामक बना रही है। आज इन सभी कारकों को तुरंत संबोधित करने की जरूरत है।

संवेदनशीलता और सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं की जरूरत

ऑटिज्म की समस्या से पीड़ित के जीवन का हर पहलू प्रभावित होता है। दूसरों की बात समझना व खुद की कहना चुनौतीपूर्ण होता है। इनके लिए शीघ्र निदान तथा विकासात्मक सहयोग अहम है। वहीं संवेदनशील समावेशी-सुलभ हेल्थ केयर सेवाओं की जरूरत है।

ऑटिज्म' नामक डिसऑर्डर दुनियाभर में तेजी से फैल रहा है। 'द लैसेट' पत्रिका में प्रकाशित 'ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज 2021' पर आधारित अध्ययन के अनुमानों के अनुसार, 61.8 मिलियन यानी 6 करोड़ 18 लाख लोग इस समस्या से पीड़ित पाए गए। इसमें महिलाएं, पुरुष तथा बच्चे सभी शामिल हैं। आंकड़ों के मुताबिक, विश्व का हर 127वां व्यक्ति ऑटिस्टिक है। खासकर वर्ष 2000 के बाद से ऑटिज्म के मामलों में 178 प्रतिशत वृद्धि देखी गई। यह संख्या लगातार बढ़ रही है। महिलाओं के मुकाबले पुरुषों में इसका प्रसार अधिक है। प्रति एक लाख पुरुषों पर ऑटिज्म के 1,065 केस सामने आए, जबकि महिलाओं में यह संख्या 508 है। 'ऑटिज्म' यानी ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एसडी) से अभिप्राय एक आजीवन न्यूरो-डैवलपमेंटल स्थिति है, जो सामाजिक व्यवहार तथा संचार के तरीकों को काफी हद तक प्रभावित करती है। इसके पीड़ित लोग न तो दूसरों की बात ठीक से समझ पाते हैं, न ही खुद को अभिव्यक्त कर पाते हैं। अध्ययन के दौरान ऑटिज्म के बारे में कई तथ्य उजागर हुए, जिसके नतीजे अंतर्राष्ट्रीय जर्नल लैसेट साइकियाट्री में प्रकाशित किए गए। शोधकर्ताओं के मुताबिक, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर 20 वर्ष से कम आयु के बच्चों और किशोरों के स्वास्थ्य से जुड़ी 10 सबसे गैर-घातक में चुनौतियों में से एक है। इसके बावजूद यह समस्या जीवन के हर पहलू पर असर डालती है। ऑटिज्म से प्रभावित होने में कोई अकेला कारक उत्तरदायी नहीं माना जा सकता। यद्यपि मुख्य रूप से यह आनुवंशिक कारणों तथा मस्तिष्क के विकास में अंतर से संबद्ध है फिर भी आहार, व्यायाम,



निद्रा, तनाव, अवसाद, प्राकृतिक वातावरण एवं जीवनशैली जैसे अनेक कारक इसमें प्रभावी भूमिका निभाते हैं। गर्भावस्था के दौरान संक्रमण या तनाव होना, माता द्वारा कुछ दवाओं का सेवन, समय-पूर्व अथवा सामान्य आकार से छोटे बच्चे का जन्म होना, पर्यावरणीय विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आना आदि ऑटिज्म के जोखिम कारक हो सकते हैं। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, अधिक आयु में गर्भाधारण करना भी बच्चे के ऑटिस्टिक होने का कारण बन सकता है। एएसडी ग्रस्त बच्चे के छोटे जैविक भाई-बहन में ऑटिज्म का खतरा 3-10 प्रतिशत अधिक पाया गया। विशेषकर जुड़वां बच्चों में यह दर ज्यादा रही। चिकित्सकों के अनुसार, गर्भस्थ शिशु के

ऑटिज्मग्रस्त होने का पता लगाना संभव नहीं, चूंकि इसके लक्षण जन्म उपरंत ही प्रकट होते हैं। आमतौर पर 12-18 माह की आयु में या इससे पूर्व ही इन्हें देखा जा सकता है। ये सामान्य से लेकर गंभीर हो सकते हैं। अधिकतर मामलों में यह स्थिति जीवनपर्यन्त बनी रहती है। नवजात शिशु की दैनिक क्रियाएं स्वयं ही इस संदर्भ में विभिन्न तरह के संकेत देती नजर आती हैं, जैसे- दूसरों की भावनाएं समझने में कठिनाई, अकेले रहना, देरी से बोलना-बिल्कुल न बोलना अथवा एक ही शब्द बारंबार दोहराना, परिवर्तन के प्रति असामान्य प्रतिक्रिया, हाथ फड़फड़ाना, तेज आवाज, लाइट या विशिष्ट बनावट, गंध के प्रति बेहद संवेदनशील होना, वस्तु विशेष की ओर बार-बार इशारा करना,

मां की आवाज अनसुनी करना, अधिकतर हाथों के बल चलकर दूसरों के पास जाना, आई कॉन्टैक्ट न बनाना आदि। एक स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर होने के चलते ऑटिज्म के लक्षण भिन्न-भिन्न होते हैं, जिसके तहत प्रभावित लोगों को न्यूनतम से लेकर आंशिक या 24 घंटे तक की देखभाल की जरूरत हो सकती है। ऑटिज्म का निदान अमूमन 18-24 माह के व्यावहारिक अवलोकनों के जरिये ही किया जाता है। हालांकि, इसका समुचित इलाज उपलब्ध नहीं किंतु प्रारंभिक काल में ही स्पीच थेरेपी, व्यवहार थेरेपी (जैसे एबीए), ऑक्जुपेशनल थेरेपी आदि देने से जीवन में काफी हद तक सुधार आ सकता है। हर ऑटिस्टिक व्यक्ति अपने आप में

अलग होता है, अतः उनके सीखने, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता, संवेदनशीलता तथा दोहरावदार व्यवहार जैसे लक्षणों में विरोधाभास होना भी स्वाभाविक है। कुछेक ऑटिस्टिक व्यक्तियों में विलक्षण प्रतिभाएं भी देखने को मिलेंगी, ऐसे लोग अपनी रचनात्मकता के बल पर समूचे जगत को अर्चिभित करने का सामर्थ्य रखते हैं। शोधकर्ताओं की मानें तो इतिहास की अनेक नामचीन हस्तियों (अनुमानित, विस्तारित स्पेक्ट्रम) में ऑटिज्म के लक्षण पाए गए। इन प्रतिभाओं में भौतिक विज्ञानी अल्बर्ट आइंस्टीन, गणितज्ञ तथा भौतिक विज्ञानी आइज़ैक न्यूटन, प्रसिद्ध आधिष्ठाकार निकोलो टरेला, संगीतकार वोल्फगैंग एमाडेउस मोज़ार्ट आदि का नाम प्रमुख तौर पर लिया जा सकता है। भारत के पहले विख्यात ऑटिस्टिक फैशन मॉडल, जिन्होंने स्टीरियोटाइप को तोड़कर मॉडलिंग के क्षेत्र में अपनी उल्लेखनीय पहचान बनाई, का नाम भी इसी सूची में शामिल है। इनकी सफलता दर्शाती है कि ऑटिज्मग्रस्त लोग किसी से कम नहीं, अपनी विशिष्ट रूचियों व क्षमताओं का सही उपयोग करके वे समाज में अहम योगदान दे सकते हैं। ऑटिज्म पीड़ितों के लिए शीघ्र निदान तथा विकासात्मक सहयोग बेहद महत्वपूर्ण है। वहीं स्वास्थ्य प्रणालियों को ऑटिज्म के प्रति प्रतिक्रियात्मक बनाने के लिए समावेशी-सुलभ स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की जरूरत है। ऑटिज्म वास्तव में, कोई बीमारी न होकर मस्तिष्क के अलग तरह से कार्य करने की स्थिति है। तो क्यों न समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समभाव से सम्मान अपनाया जाए? 'ऑटिज्म और मानवता-हर जीवन का मूल्य है', साल 2026 का थीम भी यही कहता है।

प्रेरणा

मौन से जागृति तक: एक हृदय का परिवर्तन और सच्चे नेतृत्व की पहचान

मानव जीवन की सबसे बड़ी सच्चाइयों में से एक यह है कि मनुष्य केवल ज्ञान, शक्ति या धर्म से महान नहीं बनता, बल्कि उसकी वास्तविक महानता उसके हृदय की संवेदनशीलता में छिपी होती है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहाँ किसी व्यक्ति का एक छोटा-सा अनुभव उसके पूरे जीवन की दिशा बदल देता है। ऐसा ही एक गहन और प्रेरणादायक प्रसंग उस समय का है, जब एक साधारण बालक चंद्रगुप्त, अपने गुरु चाणक्य के सान्निध्य में गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर रहा था। वह युवा ऐसा था, जहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्या अर्जित करना नहीं, बल्कि जीवन के मूल्यों को समझना था। गुरुकुल का वातावरण सादगी, अनुशासन और आत्मविकास से भरा होता था। वहाँ हर शिष्य को यह सिखाया जाता था कि वह केवल अपने लिए नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए भी उपयोगी बने। चाणक्य जैसे महान गुरु अपने शिष्यों को केवल बुद्धिमान ही नहीं, बल्कि न्यायवीर्य, दूरदर्शी और संवेदनशील बनाना चाहते थे। वे जानते थे कि एक सच्चा नेता वही होता है, जो अपने लोगों के मन को समझ सके। एक दिन गुरुकुल में एक ऐसी घटना घटी, जिसने एक बालक के भीतर सोई हुई चेतना को जागृत कर दिया। एक निर्धन बालक, जिसकी आंखों में आंसू और चेहरे पर अपमान की छाप थी, धीरे-धीरे वहाँ आया। उसके वस्त्र साधारण थे, और उसकी स्थिति स्पष्ट रूप से दूसरों से भिन्न थी। कुछ अन्य शिष्यों ने उसकी गरीबी को उपहास उड़ाया था। उनके शब्दों ने उस बालक के आत्मसम्मान को गहराई से चोट पहुँचाई थी।

चंद्रगुप्त इस पूरे दृश्य का साक्षी था। उसने उस पीड़ा को देखा, उस अपमान को महसूस किया, परंतु वह कुछ कह नहीं सका। उसका मन भीतर से विचलित था, लेकिन उसके कदम थम गए थे। वह समझ नहीं पाया कि उस क्षण उस क्या करना चाहिए था। उसका मौन केवल एक प्रतिक्रिया नहीं था, बल्कि एक अनिर्णय की स्थिति थी, जो आगे चलकर उसके जीवन को सबसे बड़ी सीख बनने वाली थी। चाणक्य की दृष्टि अत्यंत सूक्ष्म थी। उन्होंने इस घटना को केवल बाहरी रूप में नहीं देखा, बल्कि उन्होंने अपने शिष्यों के भीतर चल रहे भावों को भी समझ लिया। उन्होंने सभी को एकत्र किया और शांत, किंतु प्रभावशाली स्वर में कहा, "जहाँ किसी के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचती है, वहाँ ज्ञान का कोई अर्थ नहीं रह जाता। शिक्षा का उद्देश्य केवल बुद्धि को विकसित करना नहीं, बल्कि हृदय को भी परिष्कृत करना है।" उनके शब्दों में ऐसी शक्ति थी, जो सीधे हृदय को स्पर्श करती थी। उन्होंने आगे कहा, "यदि तुम किसी के दर्द को देखकर भी मौन रहते हो, तो यह मौन भी एक प्रकार का अपराध है। सच्चा साहस केवल युद्धभूमि में नहीं, बल्कि अन्याय के सामने खड़े होने में होता है। एक सच्चा मनुष्य वही है, जो दूसरों के सम्मान को रक्षा करे, चाहे परिस्थिति कितनी भी कठिन क्यों न हो।" इसके बाद उनकी दृष्टि चंद्रगुप्त पर उठर गई। उन्होंने उससे एक ऐसा प्रश्न किया, जिसने उसके भीतर की नींव को हिला दिया—"यदि तुम भविष्य में एक महान शासक बनो, परंतु अपने ही लोगों के हृदय को न समझ सको, तो क्या तुम्हारा राज्य स्थायी रह पाएगा?" यह प्रश्न केवल शब्द नहीं थे, बल्कि एक गहरा दर्पण था,

जिसमें चंद्रगुप्त ने स्वयं को देखा। उस क्षण चंद्रगुप्त को यह अहसास हुआ कि उसका मौन एक भूल थी। उसने यह समझा कि अन्याय को देखकर चुप रहना भी अन्याय का ही समर्थन है। उसके भीतर एक नई जागृति का जन्म हुआ। वह तुरंत उस निधन बालक के पास गया, उसके आंसू पोंछे और उसे अपने पास बैठाया। उसने उसे यह एहसास दिलाया कि वह अकेला नहीं है और उसका सम्मान उतना ही महत्वपूर्ण है जितना किसी और का। यह छोटा-सा कार्य केवल एक क्षणिक सहानुभूति नहीं था, बल्कि एक गहरे परिवर्तन की शुरुआत थी। यही वह पल था, जिसने एक साधारण बालक के भीतर एक सच्चे नेता के बीज बो दिए। समय के साथ यह बीज एक विशाल वृक्ष में परिवर्तित हुआ, जिसकी छाया में एक महान साम्राज्य खड़ा हुआ। जब चंद्रगुप्त आगे चलकर सम्राट बना, तो उसकी सबसे बड़ी शक्ति उसकी सेना या उसकी रणनीति नहीं थी, बल्कि उसकी संवेदनशीलता थी। वह अपने प्रजा के दुःख-दर्द को समझता था, उनके साथ यत्न करता था और उनके आत्मसम्मान की रक्षा करता था। उसने यह सिद्ध कर दिया कि एक राज्य केवल बल से नहीं, बल्कि विश्वास और करुणा से चलता है। उसका शासन इस बात का प्रमाण था कि यदि एक नेता अपने लोगों के हृदय को जीत ले, तो उसे बाहरी शक्ति की आवश्यकता बहुत कम रह जाती है। लोग स्वयं उसके साथ खड़े होते हैं, क्योंकि वे उसमें अपना विश्वास और आस्था देखते हैं। चंद्रगुप्त का जीवन यह सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व वही है, जिसमें शक्ति और संवेदना का संतुलन हो।

आज के युग में यह विश्व शिक्षा उतनी ही महत्वपूर्ण है। हम सभी अपने जीवन में कभी न कभी ऐसे क्षणों का सामना करते हैं, जब हमें यह तय करना होता है कि हम मौन रहेंगे या सही के पक्ष में खड़े होंगे। अक्सर हम सोचते हैं कि हमारा छोटा-सा हस्तक्षेप क्या बदल सकता है, परंतु सच यह है कि वही छोटे-छोटे कदम बड़े परिवर्तन की नींव रखते हैं। संवेदना हमें यह सिखाती है कि हम केवल अपने बारे में न सोचें, बल्कि दूसरों के भावों को भी समझें। जब हम किसी के दर्द को महसूस करते हैं और उसके साथ खड़े होते हैं, तो हम केवल उसकी सहायता नहीं करते, बल्कि अपने भीतर के इंसान को भी मजबूत बनाते हैं। यदि समाज में हर व्यक्ति यह संकल्प ले कि वह किसी के अपमान को सहन नहीं करेगा और हर किसी के अधिकारों की रक्षा करेगा, तो यह दुनिया एक बेहतर स्थान बन सकती है। क्योंकि अंततः, समाज की मजबूती उसके लोगों के बीच के संबंधों और आपसी सम्मान पर निर्भर करती है। यह कथा हमें यह सिखाती है कि जीवन में सच्ची महानता बड़े पद या उपलब्धियों में नहीं, बल्कि उन छोटे-छोटे क्षणों में छिपी होती है, जब हम किसी के लिए खड़े होते हैं। जब हम अपने मौन को तोड़ते हैं और न्याय के पक्ष में आवाज उठाते हैं, तभी हम अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं। अंततः, यह कहना उचित होगा कि संवेदना ही वह प्रकाश है, जो जीवन के अंधकार को दूर करता है। यह वह शक्ति है, जो एक साधारण व्यक्ति को असाधारण बना देती है। और यही वह मूल्य है, जो एक बालक को महान सम्राट और एक इंसान को सच्चा नेता बनाता है।

अभियान

तप, प्रतीक्षा और वरदान: जब भगवान स्वयं पुत्र बनकर आए

प्राचीन काल की एक अद्भुत और भावपूर्ण कथा में एक ऐसा प्रसंग आता है, जहाँ भक्ति, तपस्या और अटूट श्रद्धा अपने चरम पर पहुँचकर स्वयं भगवान को भी झुकने के लिए विवश कर देती है। यह कथा उस समय की है जब महर्षि याज्ञवल्क्य, अपनी महूर और गृह्य वाणी में श्रीराम की पावन कथा का रसपान करा रहे थे, और उनके सामने बैठे महर्षि भरद्वाज अत्यंत एकाग्रता और आनंद के साथ उस दिव्य कथा को सुन रहे थे। हर शब्द में भक्ति की गहराई थी, हर प्रसंग में जीवन का सत्य छिपा था। नाद प्रसंग के उपरंत याज्ञवल्क्यजी ने एक अत्यंत रहस्यमय और प्रेरणादायक कथा का वर्णन आरंभ किया—यह कथा थी मनु और शतृष्य की, जिनकी तपस्या और प्रेम ने स्वयं भगवान को पुत्र रूप में अवतरित होने के लिए बाध्य कर दिया। मनु, जिन्हें समस्त मानव जाति का आदिपुरुष माना जाता है, केवल एक राजा ही नहीं थे, बल्कि धर्म, नीति और त्याग के आदर्श भी थे। उनकी पत्नी शतरूपा भी उतनी ही पवित्र, पतिव्रता और धर्मान्विता थीं। दोनों का जीवन संयम, श्रद्धा और मर्यादा का प्रतीक था।

राज्य का संचालन करते हुए मनु ने वर्षों तक अपने कर्तव्य का पालन किया। उन्होंने अपने प्रजा का पालन-पोषण भक्ति, धर्म की स्थापना की और एक आदर्श शासन का उदाहरण प्रस्तुत किया। परंतु समय के साथ, जब वृद्धावस्था ने उनके जीवन में प्रवेश किया, तब उनके भीतर एक गहरी बेचैनी उत्पन्न हुई। यह बेचैनी किसी भौतिक वस्तु की नहीं थी, बल्कि आत्मिक शांति की थी। उन्हें यह अनुभव होने लगा कि संसार के सारे सुख, सारी उपलब्धियाँ और सारा वैभव भी उस शांति को नहीं दे सकते, जो प्रभु नाद प्रसंग के उपरंत याज्ञवल्क्यजी ने एक अत्यंत रहस्यमय और प्रेरणादायक कथा का वर्णन आरंभ किया—यह कथा थी मनु और शतृष्य की, जिनकी तपस्या और प्रेम ने स्वयं भगवान को पुत्र रूप में अवतरित होने के लिए बाध्य कर दिया। मनु, जिन्हें समस्त मानव जाति का आदिपुरुष माना जाता है, केवल एक राजा ही नहीं थे, बल्कि धर्म, नीति और त्याग के आदर्श भी थे। उनकी पत्नी शतरूपा भी उतनी ही पवित्र, पतिव्रता और धर्मान्विता थीं। दोनों का जीवन संयम, श्रद्धा और मर्यादा का प्रतीक था।

राज्य का संचालन करते हुए मनु ने वर्षों तक अपने कर्तव्य का पालन किया। उन्होंने अपने प्रजा का पालन-पोषण भक्ति, धर्म की स्थापना की और एक आदर्श शासन का उदाहरण प्रस्तुत किया। परंतु समय के साथ, जब वृद्धावस्था ने उनके जीवन में प्रवेश किया, तब उनके भीतर एक गहरी बेचैनी उत्पन्न हुई। यह बेचैनी किसी भौतिक वस्तु की नहीं थी, बल्कि आत्मिक शांति की थी। उन्हें यह अनुभव होने लगा कि संसार के सारे सुख, सारी उपलब्धियाँ और सारा वैभव भी उस शांति को नहीं दे सकते, जो प्रभु नाद प्रसंग के उपरंत याज्ञवल्क्यजी ने एक अत्यंत रहस्यमय और प्रेरणादायक कथा का वर्णन आरंभ किया—यह कथा थी मनु और शतृष्य की, जिनकी तपस्या और प्रेम ने स्वयं भगवान को पुत्र रूप में अवतरित होने के लिए बाध्य कर दिया। मनु, जिन्हें समस्त मानव जाति का आदिपुरुष माना जाता है, केवल एक राजा ही नहीं थे, बल्कि धर्म, नीति और त्याग के आदर्श भी थे। उनकी पत्नी शतरूपा भी उतनी ही पवित्र, पतिव्रता और धर्मान्विता थीं। दोनों का जीवन संयम, श्रद्धा और मर्यादा का प्रतीक था।

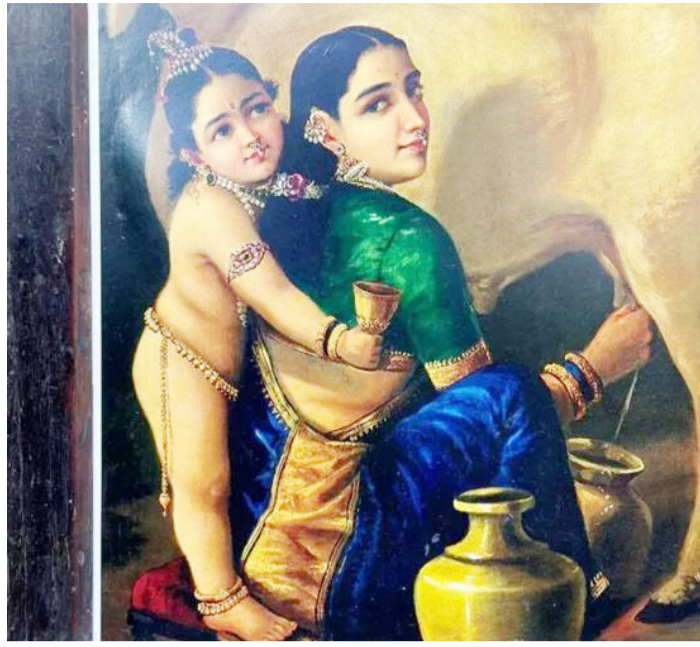
मनु ने अत्यंत विनम्रता और श्रद्धा के साथ का भक्तिपूर्ण वंदन किया, और अंततः वायु की भी त्याग कर दिया। वे एक पैर पर खड़े होकर हजारों वर्षों तक तप में लीन रहे। यह तपस्या केवल शरीर की नहीं थी, बल्कि मन और आत्मा की भी थी। हर क्षण, हर श्वास में केवल प्रभु का स्मरण था। उनकी इस अद्भुत और अडिग तपस्या को देखकर त्रिदेव—ब्रह्मा, विष्णु और महेश—भी चकित रह गए। उन्होंने कई बार उनकी परीक्षा ली, उन्हें विचलित करने का प्रयास किया, परंतु मनु और शतरूपा का संकल्प अटूट था। उनका मन किसी भी प्रलोभन या भय से प्रभावित नहीं हुआ। यह केवल तपस्या नहीं थी,

महत्वपूर्ण क्षण था। समय के साथ, जब उनका पृथ्वी पर जीवन पूर्ण हुआ, उन्होंने अपने शरीर का त्याग किया। परंतु उनकी कथा यहीं समाप्त नहीं हुई। अगले जन्म में वे त्रेता युग में अयोध्या के राजा दशरथ और रानी कौशल्या के रूप में प्रकट हुए। और उसी जन्म में, भगवान ने अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करते हुए श्रीराम के रूप में उनके पुत्र बनकर अवतर लिये। यह कथा हमें यह सिखाती है कि सच्ची भक्ति, तपस्या और समर्पण कभी व्यर्थ नहीं जाते। यदि मन में सच्चा प्रेम और श्रद्धा हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक सत्य है—कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग कठिन अस्वयं है, परंतु असंभव नहीं। अंततः, यह प्रसंग हमें यह संदेश देता है कि यदि हमारे भीतर अटूट विश्वास, धैर्य और समर्पण हो, तो भगवान भी भक्त के प्रेम में बंध जाते हैं। यह केवल एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक स

जब कला बनी विरासत की आवाज: 'यशोदा और कृष्ण' ने 167 करोड़ में रच दिया भारतीय इतिहास

भारतीय कला जगत में एक ऐसा ऐतिहासिक क्षण सामने आया है, जिसने न केवल रिकॉर्ड तोड़ा है बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत की वैश्विक प्रतिष्ठा को भी नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। महान चित्रकार Raja Ravi Varma की कालजयी कृति 'यशोदा और कृष्ण' 167.2 करोड़ रुपये की अभूतपूर्व कीमत पर नीलाम हुई है। यह नीलामी मुंबई में आयोजित Saffronart के मंच पर हुई, जहां महज सात मिनट के भीतर इस पेंटिंग ने भारतीय कला बाजार का इतिहास बदल दिया। यह केवल एक पेंटिंग की बिक्री नहीं थी, बल्कि भारतीय परंपरा, भावनाओं और आस्था की उस विरासत का सम्मान था, जिसे सदियों से संजोकर रखा गया है। इस उपलब्धि ने उस रिकॉर्ड को भी

पीछे छोड़ दिया, जो अब तक M F Husain की प्रसिद्ध कृति 'ग्राम यात्रा' के नाम था, जो 118 करोड़ रुपये में बिकी थी। लेकिन 'यशोदा और कृष्ण' की यह कीमत केवल एक आर्थिक आंकड़ा नहीं है, बल्कि यह वैश्विक निवेश और सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। इस ऐतिहासिक पेंटिंग को Cyrus S Poonawalla ने खरीदा है, जो Serum Institute of India के संस्थापक हैं। उन्होंने इसे अपने निजी संग्रह का हिस्सा बनाने के साथ-साथ एक 'राष्ट्रीय धरोहर' के रूप में देखा है। उनकी यह सोच अपने आप में उल्लेखनीय है, क्योंकि उन्होंने यह भी कहा कि इस कृति



को समय-समय पर आम जनता के लिए प्रदर्शित किया जाएगा, ताकि हर व्यक्ति इस अमूल्य विरासत का अनुभव कर सके। यह कदम कला को केवल अमीरों तक सीमित रखने की धारणा को तोड़ता है, बल्कि उसे समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने की दिशा में एक सकारात्मक प्रयास माना जा रहा है। 'यशोदा और कृष्ण' केवल एक पेंटिंग नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति के उस भावनात्मक पक्ष को दर्शाती है, जो मां और बच्चे के संबंध में सबसे पवित्र रूप में दिखाई देता है। 1890 के दशक में बनाई गई यह कृति भागवत पुराण के एक प्रसंग को चित्रित करती है, जिसमें मां यशोदा और बाल कृष्ण के बीच का स्नेह, ममता और दिव्यता अत्यंत जीवंत रूप में सामने आती है। इस चित्र में

कृष्ण केवल एक देवता के रूप में नहीं, बल्कि एक मासूम बालक के रूप में नजर आते हैं, जो अपनी मां की गोद में सुरक्षित और स्नेह से भरे हुए हैं। राजा रवि वर्मा की कला की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि उन्होंने भारतीय पौराणिक कथाओं को यथार्थवादी शैली में प्रस्तुत किया। उन्होंने देवी-देवताओं को एक मानवीय रूप दिया, जिससे आम लोग उनसे जुड़ सके। 'यशोदा और कृष्ण' इस शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहां भावनाओं की गहराई और तकनीकी उत्कृष्टता का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। प्रकाश और छाया का संतुलन, रंगों का सूक्ष्म उपयोग और चेहरे की अभिव्यक्तियां इस पेंटिंग को जीवंत बना देती हैं।

कला विशेषज्ञों का मानना है कि यह पेंटिंग भारतीय कला की 'मोनालिसा' के समान है, क्योंकि इसमें भावनाओं की गहराई और रहस्यात्मकता दोनों मौजूद हैं। यह केवल एक दृश्य नहीं, बल्कि एक अनुभव है, जिसे देखने वाला व्यक्ति खुद को उस भावनात्मक दुनिया का हिस्सा महसूस करता है। इस नीलामी ने यह भी संकेत दिया है कि भारतीय कला बाजार अब तेजी से विकसित हो रहा है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है। पहले जहां भारतीय कलाकृतियों को सीमित दायरे में आंका जाता था, वहीं अब वे करोड़ों की कीमत पर बिक रही हैं और वैश्विक निवेशकों का ध्यान आकर्षित कर रही हैं। यह बदलाव न केवल कलाकारों के लिए, बल्कि पूरे देश के सांस्कृतिक गौरव

के लिए एक सकारात्मक संकेत है। इस पूरे घटनाक्रम को केवल एक व्यापारिक उपलब्धि के रूप में देखना उचित नहीं होगा। यह उस भावनात्मक और सांस्कृतिक विरासत का पुनर्स्थापना है, जो भारतीय समाज की आत्मा में बसती है। 'यशोदा और कृष्ण' की यह ऐतिहासिक बिक्री यह साबित करती है कि कला केवल दीवारों पर टंगी हुई तस्वीर नहीं होती, बल्कि वह एक जीवंत परंपरा होती है, जो समय के साथ और भी अधिक मूल्यवान होती जाती है। यह घटना आने वाले समय में भारतीय कला के लिए एक नई दिशा तय कर सकती है और दुनिया को यह संदेश देती है कि भारत की सांस्कृतिक धरोहर आज भी उतनी ही समृद्ध और प्रासंगिक है, जितनी सदियों पहले थी।

सूरत में लोकल गवर्नमेंट चुनाव-2026 की तैयारियां पूरी गति से, 26 अप्रैल को मतदान निर्धारित

सूरत। Surat में आगामी लोकल गवर्नमेंट चुनाव-2026 की तैयारियां पूरी गति से चल रही हैं। State Election Commission द्वारा 1 अप्रैल 2026 को चुनाव की घोषणा के साथ ही जिला प्रशासन पूरी तरह सक्रिय हो गया है। जिला चुनाव अधिकारी एवं कलेक्टर Dr. Saurabh Pardhi के नेतृत्व में प्रशासन ने चुनाव प्रक्रिया को सुचारू, पारदर्शी और निष्पक्ष बनाने के लिए सभी स्तरों पर तैयारी तेज कर दी है। जिला प्रशासन ने मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट को सख्ती से लागू करते हुए चुनाव प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों को विशेष प्रशिक्षण दिया है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मतदान केंद्रों की व्यवस्था, मतदाता सूची प्रबंधन, ईवीएम और वीवीपैट प्रणाली, मतदान के दिन सुरक्षा और आपातकालीन प्रबंधन, आचार संहिता के पालन, मतदान कर्मचारियों और सुरक्षा बलों के बीच समन्वय जैसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों पर विस्तृत जानकारी दी गई। सूरत म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन, जिला



पंचायत और तालुका पंचायतों के लिए चुनाव अधिकारियों की नियुक्तियां पूरी कर ली गई हैं। आचार संहिता के पालन हेतु जिलेभर में टीमें सक्रिय कर दी गई हैं, ताकि चुनावी गतिविधियां शांतिपूर्ण और निष्पक्ष रूप से संपन्न हो सकें। चुनाव कार्यक्रम के अनुसार जिले में 26 अप्रैल 2026 को मतदान होगा, जबकि मतगणना 28 अप्रैल 2026 को निर्धारित है। चुनाव अधिसूचना 6 अप्रैल को जारी होगी। नामांकन पत्र भरने की अंतिम तिथि 11 अप्रैल है, नामांकन पत्रों की जांच 13 अप्रैल को होगी और आवश्यक होने पर 15 अप्रैल तक नाम वापस लिया जा सकेगा।

पुनर्मतदान की प्रक्रिया 27 अप्रैल को संपन्न होगी। जिला चुनाव अधिकारी के अनुसार, सूरत महानगर पालिका के 30 वार्डों में कुल 2,47,63,78 मतदाता पंजीकृत हैं। इसके लिए 2,609 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। सूरत जिला पंचायत की कुल 204 सीटों और 11 तालुका पंचायतों की कुल 36,43,20 मतदाता पंजीकृत हैं। नगर पालिकाओं की स्थिति देखें तो कडोदरा नगर पालिका में 20 मतदान केंद्रों पर 19,334 मतदाता, बारडोली नगर पालिका में 9 वार्डों के अंतर्गत 46 मतदान

केंद्रों पर 41,669 मतदाता, मांडवी नगर पालिका में 6 वार्डों के लिए 14 मतदान केंद्रों पर 12,841 मतदाता और तरसाडी नगर पालिका में 7 वार्डों के लिए 21 मतदान केंद्रों पर 18,554 मतदाता पंजीकृत हैं। चुनाव के सुचारू संचालन के लिए जिला प्रशासन ने व्यापक और सुनियोजित तैयारियां की हैं। इसके साथ ही मतदाताओं को जागरूक करने के लिए विभिन्न गतिविधियों और अभियान आयोजित किए जाएंगे, ताकि अधिक से अधिक लोग लोकतंत्र के इस महापर्व में भागीदारी सुनिश्चित कर सकें। प्रशासन का लक्ष्य है कि हर मतदाता तक सही जानकारी पहुंचाई जाए और चुनाव में सहभागिता बढ़े, जिससे सूरत में चुनाव पूरी तरह निष्पक्ष, पारदर्शी और सुरक्षित तरीके से संपन्न हो। सूरत जिला प्रशासन का यह प्रयास यह सुनिश्चित करने के लिए है कि मतदाता विना किसी बाधा के अपने मताधिकार का प्रयोग करें और स्थानीय निकायों का चुनाव लोकतंत्र के उच्चतम मानकों के अनुसार संपन्न हो।

वित्त वर्ष 2025-26: अप्रत्यक्ष कर संग्रह में केंद्र सरकार का बेहतर प्रदर्शन, खजाने में आया 15.52 लाख करोड़ रुपये

संपूर्ण वित्त वर्ष 2025-26 में अप्रत्यक्ष कर संग्रह के मामले में केंद्र सरकार ने अपने निर्धारित लक्ष्यों को पार करते हुए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। सरकारी सूत्रों के अनुसार, इस दौरान कुल कर वसूली संशोधित अनुमान से अधिक रही और सरकार के निर्धारित लक्ष्य 15.52 लाख करोड़ रुपये को भी पार कर लिया। यह उपलब्धि कर प्रशासन की दक्षता और व्यापक आर्थिक गतिविधियों में निरंतर सुधार का प्रमाण है। इस वित्त वर्ष में कस्टम ड्यूटी, उत्पाद शुल्क और वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) से होने वाली आय में संतोषजनक वृद्धि हुई, जिससे खजाने में अतिरिक्त धनराशि का प्रवाह सुनिश्चित हुआ। कस्टम ड्यूटी से 102 प्रतिशत और उत्पाद शुल्क से 101 प्रतिशत वसूली हुई, जबकि केंद्रीय जीएसटी संग्रह 100.8 प्रतिशत रहा। कुल मिलाकर जीएसटी और गैर-जीएसटी मदों से 101.2 प्रतिशत संग्रह दर्ज किया गया। यह आंकड़ा दर्शाता है कि कर प्रशासन ने अपने प्रयासों में तेजी लाकर करदाताओं के अनुपालन को सुनिश्चित किया और



आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि के अवसरों को प्रभावी रूप से भुनाया। विशेषज्ञों के अनुसार, उपभोक्ता खर्च, औद्योगिक उत्पादन और डिजिटल लेन-देन में वृद्धि ने भी इस संग्रह में अहम योगदान दिया। हालांकि, हेल्थ और नेशनल सिक्वोरिटी के तहत वसूली अपेक्षा से कम रही। पान मसाला उत्पादकों पर लगाए गए इस सेस से सरकार ने 2,330 करोड़ रुपये जुटाने का लक्ष्य रखा था, लेकिन वास्तविक वसूली केवल 63 प्रतिशत

ही रही। अधिकारियों ने इस कमी को प्रारंभिक चरण में लागू होने वाले सेस और जीएसटी के अतिरिक्त होने से जोड़कर देखा। इसके बावजूद सरकार ने अगले चरण के लिए इस सेस से 14,000 करोड़ रुपये जुटाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसके लिए विशेष अभियान चलाए जा रहे हैं और डिजिटल अनुपालन को प्रभावी बनाने की कोशिशें तेज की जा रही हैं। सरकार की योजना है कि कर संग्रह को

प्रक्रिया को और सुदृढ़ किया जाए, नए स्रोतों से राजस्व जुटाने के उपाय किए जाएं और डिजिटल अनुपालन को और मजबूती दी जाए। विशेषज्ञों का मानना है कि अप्रत्यक्ष करों में इस वित्त वर्ष में हुई वृद्धि सरकार की वित्तीय नीतियों, जीएसटी नेटवर्क के व्यापक विस्तार और करदाताओं की बेहतर भागीदारी का परिणाम है। साथ ही, यह संकेत भी है कि अर्थव्यवस्था में सुधार जारी है और सरकार के प्रयासों से वित्तीय स्थिरता को बल मिला है। वास्तव में, 15.52 लाख करोड़ रुपये का अप्रत्यक्ष कर संग्रह न केवल लक्ष्य से अधिक रहा, बल्कि यह भारत की कर प्रशासन प्रणाली की दक्षता और वित्तीय योजना की मजबूती का भी प्रमाण है। अधिकारियों का कहना है कि जैसे-जैसे डिजिटल अनुपालन और करदाताओं की रिपोर्टिंग प्रणाली मजबूत होगी, कर संग्रह में और भी वृद्धि होगी। इस उपलब्धि ने सरकार को वित्तीय वर्ष 2025-26 अभियान चलाए जा रहे हैं और डिजिटल अनुपालन को प्रभावी बनाने की कोशिशें तेज की जा रही हैं। भारत में अप्रत्यक्ष कर संग्रह की यह

उपलब्धि वित्तीय स्वास्थ्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण मानी जा रही है। यह दर्शाती है कि कर प्रशासन और सरकारी योजनाओं में लगातार सुधार किए जाने के बावजूद, करदाताओं की भागीदारी और कर संग्रह प्रणाली में पारदर्शिता बढ़ाई जा रही है। साथ ही, सरकार की योजनाओं के अनुरूप नए स्रोतों से राजस्व जुटाने की दिशा में भी ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि यह प्रक्रिया आगे चलकर भारत की अर्थव्यवस्था को और मजबूती देने में अहम भूमिका निभाएगी और वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए भी सकारात्मक आधार तैयार करेगी। इस प्रकार, वित्त वर्ष 2025-26 का अप्रत्यक्ष कर संग्रह न केवल लक्ष्य से अधिक रहा, बल्कि यह कर प्रशासन की कार्यकुशलता, आर्थिक गतिविधियों की मजबूती और वित्तीय योजनाओं को प्रभावी क्रियान्वयन का स्पष्ट संकेत भी देता है। यह उपलब्धि सरकार को आगामी वर्षों में कर संग्रह में और सुधार करने और डिजिटल अनुपालन को और सुदृढ़ करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है।

नई दिल्ली। वैश्विक स्तर पर बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव और आपूर्ति श्रृंखला में लगातार आ रही बाधाओं के बीच केंद्र सरकार ने एक महत्वपूर्ण और त्वरित निर्णय लेते हुए पेट्रोकेमिकल उत्पादों के आयात पर लगने वाले पूर्ण सीमा शुल्क को, अस्थायी रूप से माफ कर दिया है। यह राहत 30 जून तक प्रभावी रहेगी और इसका सीधा उद्देश्य घरेलू उद्योगों को कच्चे माल की कमी और बढ़ती लागत के दबाव से बचाना है। वित्त मंत्रालय के इस फैसले को ऐसे समय में लागू किया गया है, जब पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के कारण वैश्विक बाजारों में अस्थिरता देखी जा रही है। समुद्री आपूर्ति मार्गों पर दबाव आगे चलकर भारत की अर्थव्यवस्था को और मजबूती देने में अहम भूमिका निभाएगी और वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए भी सकारात्मक आधार तैयार करेगी। इस प्रकार, वित्त वर्ष 2025-26 का अप्रत्यक्ष कर संग्रह न केवल लक्ष्य से अधिक रहा, बल्कि यह कर प्रशासन की कार्यकुशलता, आर्थिक गतिविधियों की मजबूती और वित्तीय योजनाओं को प्रभावी क्रियान्वयन का स्पष्ट संकेत भी देता है। यह उपलब्धि सरकार को आगामी वर्षों में कर संग्रह में और सुधार करने और डिजिटल अनुपालन को और सुदृढ़ करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है।

महंगाई पर नियंत्रण रखा जा सके। इस अस्थायी छूट के तहत जिन प्रमुख रसायनों को शामिल किया गया है, उनमें मेथनॉल, एनालाइसिस अमोनिया, टॉलुइन, स्टोइरिन, डाइक्लोरोमिथेन (मैथिलीन क्लोराइड), विनाइल क्लोराइड मोनोमर, पॉलीब्यूटाडाइन, एटिलेन-ब्यूटाडाइन और अनसैचुरेटेड पॉलिएस्टर रॉजिन जैसे महत्वपूर्ण उत्पाद शामिल हैं। ये सभी पेशे 'फोडस्टॉक्स' और 'इंटरमीडियट्स' हैं, जिन पर कई डाउनस्ट्रीम उद्योग निर्भर रहते हैं। इन पर ड्यूटी हटने से न केवल आयात घटता होगा, बल्कि उत्पादन लागत में भी उल्लेखनीय कमी आएगी। इस निर्णय का व्यापक असर देखने को मिल सकता है। प्लास्टिक और पैकेजिंग उद्योग में लागत घटने से गैरमरग की वसूली की कीमतों पर नियंत्रण संभव होगा। टेक्सटाइल और फार्मा क्षेत्र को भी इससे राहत मिलेगी, क्योंकि ये दोनों क्षेत्र बड़ी मात्रा में रसायनों पर निर्भर करते हैं। ऑटोमोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर में भी कंपोनेंट्स की लागत कम होने की उम्मीद है, जिससे इन उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ेगी। सरकार ने स्पष्ट किया है कि यह कदम पूरी तरह से अस्थायी और लक्षित है। इसका उद्देश्य बाजार में अस्थिरता को कम करना और उद्योगों को संकेत की स्थिति में स्थिरता देना है। जैसे ही वैश्विक आपूर्ति स्थिति सामान्य होगी, इस तरह की छूट को समीक्षा की जाएगी। यह नीति इस

बात का संकेत भी देती है कि सरकार परिस्थितियों के अनुसार त्वरित और व्यावहारिक निर्णय लेने के लिए तैयार है। इससे पहले भी सरकार ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में उछाल के प्रभाव को कम करने के लिए पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क में कटौती की थी। साथ ही, डीजल और एविएशन टैक्स पर फ्यूल (एटीएफ) पर निर्यात शुल्क लगाकर यह सुनिश्चित किया गया था कि घरेलू बाजार में पर्याप्त आपूर्ति बनी रहे। इन कदमों का उद्देश्य भी यही था कि वैश्विक अस्थिरता का असर आम उपभोक्ता और उद्योगों पर कम से कम पड़े। विशेषज्ञों का मानना है कि पश्चिम एशिया में जारी तनाव का प्रभाव केवल ऊर्जा क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह रसायन, उर्वरक और अन्य औद्योगिक उत्पादों की आपूर्ति को भी प्रभावित कर सकता है। समुद्री मार्गों में व्यवधान आने से शिपिंग लागत बढ़ती है और डिजलीवर में देरी होती है, जिससे उद्योगों को उत्पादन क्षमता पर असर पड़ता है। ऐसे में सरकार द्वारा पेट्रोकेमिकल आयात पर ड्यूटी माफ करना एक रणनीतिक कदम है, जो औद्योगिक उत्पादन को बचाए रखने और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने में मदद करेगा। इस फैसले से यह भी स्पष्ट होता है कि सरकार न केवल ताल्कालिक समस्याओं का समाधान कर रही है, बल्कि दीर्घकालिक आर्थिक संतुलन बनाए रखने पर भी ध्यान दे रही है।

जौनपुर में मूल्यांकन बजट पर उठे सवाल जलपान मद में गड़बड़ी की जांच तेज

जौनपुर। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद की बोर्ड परीक्षाओं के मूल्यांकन कार्य के दौरान जलपान मद में कथित वित्तीय अनियमितताओं को लेकर जिले में प्रशासनिक स्तर पर लहलहा तेज हो गई है। शिक्षकों के संतुलन द्वारा उठाए गए गंभीर आरोपों के बाद जिला प्रशासन ने मामले को प्रार्थमिकता से लेते हुए औपचारिक जांच प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस घटनाक्रम ने न केवल शिक्षा विभाग में पारदर्शिता पर सवाल खड़े किए हैं, बल्कि सरकारी खर्चों की निगरानी व्यवस्था को भी कठपुतरी में ला खड़ा किया है। मामले की गंभीरता को देखते हुए जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चंद्र ने त्वरित कार्रवाई करते हुए मुख्य कोषाधिकारी को जांच की जिम्मेदारी सौंप दी है। इसके साथ ही समानांतर रूप से जिला विद्यालय निरीक्षक (डीआईओएस) डॉ. राकेश कुमार ने परिषद स्तर से मिले निर्देशों के अनुपालन में तैय सस्वरूप जांच समिति का गठन किया है। इस समिति में एडीआईओएस और राकेश कुमार यादव, अभिषेक कुमार सिंह और वित्त एवं लेखा से जुड़े एक अधिकारी को शामिल किया गया है, ताकि जांच प्रक्रिया निष्पक्ष और तकनीकी रूप से सटीक ढंग से



पूरी की जा सके। जांच टीम को सख्त निर्देश दिए गए हैं कि वह सीमित समय के भीतर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करे। इसके तहत जिले के सभी मूल्यांकन केंद्रों से विस्तृत जानकारी तालव की गई है। उचयनियंत्रकों से परीक्षकों की विधिवर उपस्थिति, जलपान और पेयजल की व्यवस्था के नाम पर लगभग 12 लाख रुपये की अनियमितता हुई है। आरोप यह भी है कि कई केंद्रों पर वास्तविक खर्च कम हुआ, लेकिन कागजों में अधिक राशि दर्शाई गई। इस शिकायत के बाद प्रशासन हरकत में आया और पूरे मामले की तह तक जाने का निर्णय लिया गया। डीआईओएस डॉ. राकेश कुमार ने स्पष्ट रूप से कहा है कि शासन द्वारा जारी दिशानिर्देशों का उल्लंघन किसी भी स्तर में स्वीकार्य नहीं होगा। उन्होंने यह भी कहा कि यदि जांच में आरोपों की पुष्टि होती है, तो दोषी अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। साथ ही उन्होंने यह सुनिश्चित करने पर जोर दिया कि जांच प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी और समयावद्ध

हो, ताकि दोषियों को जल्द विनष्ट किया जा सके और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। यह मामला केवल एक जिले तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे सिस्टम के लिए एक चेतावनी के रूप में देखा जा रहा है। शिक्षा जैसे संवेदनशील क्षेत्र में यदि बजट के उपयोग में अनियमितता सामने आती है, तो यह न केवल सरकारी संसाधनों के दुुरुपयोग का मामला बनता है, बल्कि व्यवस्था की विश्वसनीयता पर भी सवाल खड़े करता है। इसलिए प्रशासन इस मामले में किसी भी प्रकार की लापरवाही बरतने के मूड में नहीं है। जौनपुर में शुरू हुई यह जांच अब एक महत्वपूर्ण उदाहरण बन सकती है, जहां पारदर्शिता और जवाबदेही को प्रार्थमिकता देते हुए सरकारी खर्चों की गहन समीक्षा की जा रही है। आने वाले दिनों में जांच रिपोर्ट के निकर्ष यह तय करेगे कि आरोपों में कितनी सच्चाई है और किन स्तरों पर सुधार की आवश्यकता है। फिलहाल, जिले में इस मामले को लेकर चर्चाओं का दौर जारी है और सभी की नजरें जांच के परिणाम पर टिकी हुई हैं।

जगदलपुर। भरमपुरा क्रीडा परिसर में जारी खेलों इंडिया ट्राइबल गेम्स के एथलेटिक्स मुकाबलों में तीसरे दिन जबरदस्त प्रतिस्पर्धा देखने को मिली, जहां देश के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने अपनी ही ताकत शोक दी। ट्रैक और फील्ड दोनों स्पर्धाओं में खिलाड़ियों का उत्साह चरम पर नजर आया और हर इवेंट में पक्ष के लिए कड़ा संघर्ष देखने को मिला। जैसे-जैसे प्रतियोगिता में बढ़ रही है, वैसे-वैसे मुकाबलों और अधिक रोमांचक होते जा रहे हैं, जिससे दर्शकों का उत्साह भी लगातार बढ़ रहा है। इस कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच ओडिशा ने एक बार फिर अपनी श्रेष्ठता साबित करते हुए पदक तालिका में शीर्ष स्थान बरकरार रखा है। अब तक ओडिशा के खिलाड़ियों ने शांनदार प्रदर्शन करते हुए 7 स्वर्ण, 6 रजत और 6 कांस्य पदक अपने नाम किए हैं। ओडिशा की इस निरंतर सफलता ने यह स्पष्ट कर दिया है कि उसके खिलाड़ी न केवल तकनीकी रूप से मजबूत हैं, बल्कि मानसिक रूप से भी पूरी तरह तैयार होकर मैदान में उतर रहे हैं। झारखंड की टीम भी पीछे नहीं रही और 5

एथलेटिक्स में ओडिशा का दबदबा, खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स में पदकों की रोमांचक जंग

जगदलपुर। भरमपुरा क्रीडा परिसर में जारी खेलों इंडिया ट्राइबल गेम्स के एथलेटिक्स मुकाबलों में तीसरे दिन जबरदस्त प्रतिस्पर्धा देखने को मिली, जहां देश के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने अपनी ही ताकत शोक दी। ट्रैक और फील्ड दोनों स्पर्धाओं में खिलाड़ियों का उत्साह चरम पर नजर आया और हर इवेंट में पक्ष के लिए कड़ा संघर्ष देखने को मिला। जैसे-जैसे प्रतियोगिता में बढ़ रही है, वैसे-वैसे मुकाबलों और अधिक रोमांचक होते जा रहे हैं, जिससे दर्शकों का उत्साह भी लगातार बढ़ रहा है। इस कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच ओडिशा ने एक बार फिर अपनी श्रेष्ठता साबित करते हुए पदक तालिका में शीर्ष स्थान बरकरार रखा है। अब तक ओडिशा के खिलाड़ियों ने शांनदार प्रदर्शन करते हुए 7 स्वर्ण, 6 रजत और 6 कांस्य पदक अपने नाम किए हैं। ओडिशा की इस निरंतर सफलता ने यह स्पष्ट कर दिया है कि उसके खिलाड़ी न केवल तकनीकी रूप से मजबूत हैं, बल्कि मानसिक रूप से भी पूरी तरह तैयार होकर मैदान में उतर रहे हैं। झारखंड की टीम भी पीछे नहीं रही और 5



स्वर्ण पदकों के साथ दूसरे स्थान पर मजबूती से कायम है। झारखंड के खिलाड़ियों ने कई इवेंट्स में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए ओडिशा को कड़ी टक्कर दी है, जिससे प्रतियोगिता में संतुलन बना हुआ है। वहीं गुजरात ने 3 स्वर्ण सहित कुल 9 पदकों के साथ तीसरे स्थान पर कब्जा जमाया हुआ है। कर्नाटक भी समान स्वर्ण पदकों के साथ तालिका में प्रतिस्पर्धा में बलबूत है। मैदानबल छत्तीसगढ़ के लिए तीसरा दिन तीसरा दिन कुल 24 स्वर्ण, 24 रजत और 24 कांस्य पदकों का वितरण हुआ, जो यह दर्शाता है कि प्रतियोगिता का स्तर कितना व्यापक और

खिलाड़ियों ने दर्शकों की मौजूदगी में बेहतर प्रदर्शन करने की कोशिश की और टीम ने 1 स्वर्ण तथा 3 रजत पदक हासिल किए। इस प्रदर्शन के साथ छत्तीसगढ़ पदक तालिका में पांचवें स्थान पर पहुंच गया है। परेलू मैदान का दबाव और समर्पण दोनों ही खिलाड़ियों के प्रदर्शन में झलकते दिखाई दिए। अन्य राज्यों की बात कर ले तो महाराष्ट्र ने 1 स्वर्ण सहित कुल 4 पदक जीतकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। असम ने भी 1 स्वर्ण और 2 कांस्य पदकों के साथ तालिका में अपनी स्थिति बनाए रखी है। वहीं केरल और मध्य प्रदेश ने अब तक रजत और कांस्य पदक तो जीते हैं, लेकिन स्वर्ण पदक हासिल करने में अभी सफलता नहीं मिली है, जिससे आने वाले मुकाबलों में उनके खिलाड़ियों पर अतिरिक्त दबाव रहेगा। तीसरे दिन कुल 24 स्वर्ण, 24 रजत और 24 कांस्य पदकों का वितरण हुआ, जो यह दर्शाता है कि प्रतियोगिता का स्तर कितना व्यापक और

प्रतिस्पर्धी है। हर इवेंट में खिलाड़ियों के बीच कड़ा संघर्ष देखने को मिल रहा है, जिससे यह आयोजन केवल एक खेल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि उत्साह और समर्पण का उत्सव बन गया है। अब प्रतियोगिता अपने अंतिम चरण की ओर बढ़ रही है, जहां हर राज्य अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए पूरी ताकत लगाएगा। पदक तालिका में अभी भी बदलाव की पूरी संभावना बनी हुई है, क्योंकि आने वाले मुकाबलों में निर्णायक साबित हो सकते हैं। ऐसे में यह देखना बेहद दिलचस्प होगा कि क्या ओडिशा अपनी बढ़त बनाए रख पाएगा या झारखंड और अन्य राज्य अंतिम समय में बाजी पलट देंगे। खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स ने केवल खेल प्रतियोगिता को मंच प्रदान कर रहा है, बल्कि देश के दूर-दराज के आदिवासी क्षेत्रों से निकलने वाले खिलाड़ियों को पहचान और अवसर भी दे रहा है। इस मंच के जरिए कई नए चेहरे उभरकर सामने आ रहे हैं, जो भविष्य में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। यही इस आयोजन की सबसे बड़ी सफलता भी मानी जा रही है।